BA(Hons.) PART –I , Paper- II

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

स्वामी विवेकानन्द का सामाजिक चिन्तन

स्वामी विवेकानन्द का सामाजिक चिन्तन निम्न प्रकार है –

1. **अस्पृश्यता का विरोध** – स्वामी विवेकानन्द ने सामाजिक व्यवस्था का गहन अध्ययन किया था और उन्होंने सामाजिक विषमताओं के उन्मूलन के अनेक उपाय बतलाए थे। वे उन वर्गगत तथा जातिगत श्रेष्ठता के विचारों तथा अत्याचारों का उन्मूलन करना चाहते थे, जिन्होंने हिन्दू समाज को शिथिल, स्तरबद्व तथा विघटित कर दिया था। उन्होंने भारत में व्याप्त अस्पृश्यता तथा रूढ़िवादिता पर कटु प्रहार किया था।
2. **बाल–विवाह का विरोध** – स्वामी विवेकानन्द ने बाल–विवाह की काफी भर्त्सना की है। उन्होंने कहा है कि "बाल विवाह से असामयिक सन्तानोत्पत्ति होती है और अल्पायु में सन्तान धारण करने के कारण हमारी स्त्रियॉ अल्पायु होती है, उनकी दुर्बल और रोगी सन्तानें देश में भिखारियों की संख्या बढ़ाने का कारण बनती है।"
3. **दलितों का उत्थान** – स्वामी विवेकानन्द जाति–प्रथा के विरोधी थे किन्तु यथार्थवादी विचारक के रूप में यह भी मानते थे कि उसे समूल नष्ट करना असम्भव है। उनके अभिमत में हमारा उचित प्रयास यह होना चाहिए कि चतुर्वर्ण व्यवस्था पुनर्जीवित किया जाय और निम्नतर वर्गो को ऊपर उठाकर उच्चतर वर्गो के स्तर पर लाया जाए। स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि ब्राहमणों को नीचे गिराने की अपेक्षा यह उचित है कि प्रत्येक को उनके धरातल पर ले आना चाहिए। उच्चतर को निम्नतर के स्तर पर लाने से कोई लाभ नहीं होगा।
4. **आत्म–विश्वास पर बल** – स्वामी विवेकानन्द ने अपने–आप(स्वंय) पर विश्वास करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा था कि आत्मविश्वास रहने पर ही व्यक्ति में कुछ करने की

क्षमता विकसित हो सकती है और आत्म–विश्वासी समाज ही समस्त बाधाओं को लॉघकर ऊपर उठता है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि, "लोग कहते हैं–इस पर विश्वास करो, उस पर विश्वास करो, मैं कहता हूॅ – पहले अपने आप पर विश्वास करो। अपने पर विश्वास करो। सर्वशक्ति तुम में है – कहो हम सब कुछ कर सकते हैं।"

5. **शिक्षा संबंधी विचार** – स्वामी विवेकानन्द का विचार था कि भारत की दयनीय स्थिति का मूल कारण शिक्षा की कमी अथवा आभाव है। वे तत्कालीन शिक्षा पद्वति के प्रबल आलोचक थे। अंग्रेजों की शिक्षा प्रणाली को वे क्लर्को का निर्माण करने वाला यन्त्र मानते थे। वे गुरूकुल शिक्षा पद्वति के समर्थक थे। शिक्षा पाठ्यक्रम में उन्होंने धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन को अनिवार्य बताया। स्वामी विवेकानन्द का मूल उद्वेश्य एक विशुद्व भारतीय शिक्षा पद्वति का निर्माण करना था। अंग्रेजी के अध्ययन पर भी उन्होंने बल दिया, ताकि भारतीय इस सम्पर्क भाषा का लाभ उठाकर वर्त्तमान वैज्ञानिक पद्वति के बारे में जान सके।

स्वामी विवेकानन्द ने सामाजिक व्यवस्था में अमूल परिवर्तन किया। उन्होंने आहवान् करते हुए कहा कि, "समाज के सभी सदस्यों की सम्पत्ति, शिक्षा अथवा ज्ञान प्राप्त करने के लिए सभी को समान अवसर मिलना चाहिए।" उन्होंने यह भी घोषणा की कि, "वे सामाजिक नियम जो इस स्वतंत्रता के विकास के आड़े आते हैं, हानिकारक हैं, उसे यथाश्रीघ खत्म किये जाने के लिए कदम उठाये जाने चाहिए।"

स्वामी विवेकानन्द की देन –स्वामी विवेकानन्द की प्रमुख उपलब्धियॉ निम्न प्रकार है :–

1. स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू पुनरूत्थान को अधिक पूर्ण एवं आत्मचेतना पूर्ण अवस्था प्रदान की। उन्होंने वर्ष 1893 में शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म के बारे में विस्तार से विवेचना किया। इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने विदेशों में भी हिन्दू धर्म की कीर्ति को प्रसारित कर भारतीयों के सोये हुए आत्मगौरव को जागृत किया। स्वामी विवेकानन्द ने सम्पूर्ण विश्व में हिन्दू धर्म की विजय का पताका लहराया था।
2. स्वामी विवेकानन्द संस्कृत तथा वेदान्त की शिक्षा के साथ–साथ हीगल, मिल आदि के दार्शनिक विचारों से भी अवगत थे। वे पूर्व और पश्चिम, दोनों ही संस्कृतियों के श्रेष्ठ

तत्वों से परिचित थे। अतः उन्होंने पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों के बीच समन्वय स्थापित करने का काम किया।

3. स्वामी विवेकानन्द के अनुसार भारत की जीवन शक्ति उसका **धर्म** है। इसी प्रकार पश्चिम की जीवन शक्ति **विज्ञान** है। उन्होंने हिन्दू आध्यात्मिकता तथा पाश्चत्य विज्ञान का वेदान्त के विचारों और पश्चिम की सामाजिक व्यवस्था का प्रभावी समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने धर्म और विज्ञान के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर भी बल दिया तथा इस बात का प्रतिपादन किया कि सामंजस्य में ही विश्व का कल्याण निहित है।
4. स्वामी विवेकानन्द ने प्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक स्वतंत्रता के सिद्वांत का प्रतिपादन नहीं किया, लेकिन उनकी शिक्षाओं और उनके व्यक्त्वि का राष्ट्रवादी आन्दोलन पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा। स्वामी विवेकानन्द ने आध्यात्मिक स्वतंत्रता की धारणा का संदेश दिया, लेकिन उनके संदेश से राजनीतिक एवं अन्य प्रकार की स्वतंत्रता के विचार भी लोकप्रिय हो गये।
5. स्वामी विवेकानन्द जीवन के सभी क्षेत्रों में रूढ़िवादिता और यथास्थितिवाद के विरोधी और परिवर्तन तथा प्रगति की शक्तियों के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने अस्पृश्यता का प्रबल विरोध किया तथा दलितों के उत्थान और शिक्षा के विकास हेतु सभी सम्भव प्रयत्नों पर बल दिया। स्वामी विवेकानन्द ने देश के सभी लोगों के लिए विकास हेतु **"समान अवसर के सिद्वांत"** का प्रतिपादन किया। उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय योगदान के लिए रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।